संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ **भाषा : हिन्दी**
प्रकाशन दिनांक : १ जनवरी २०२४
वर्ष : ३३ अंक : ७ (निरंतर अंक : ३७३)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

संयम-सौहार्द विशेष

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

मातृ-पितृ पूजन दिवस : १४ फरवरी

''माँ की प्रदक्षिणा करने से सारे तीर्थों का फल होता है और पिता का आदर व प्रदक्षिणा करने से सब देवों की पूजा का फल मिलता है । **सर्वतीर्थमयी माता, सर्वदेवमयः पिता** । इसका प्रचार करेंगे तो बच्चे-बच्चियों का, माँ-बाप का सबका भला हो जायेगा ।'' **- पूज्य बापूजी**

पूज्य बापूजी अध्यात्म के उच्चतम शिखर पर पहुँचे हुए उच्च कोटि के महापुरुष हैं, सिद्धपुरुष हैं। उनकी जल्दी रिहाई हो। - पद्मश्री विभूषित १२७ वर्षीय स्वामी शिवानंदजी

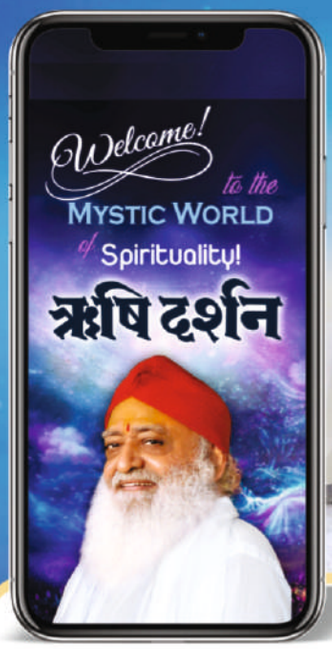

क्यों दर्शनीय है ऋषि दर्शन

ऋषि दर्शन १२वीं जयंती वर्ष २०२४

(ऋषि दर्शन की १२वीं जयंती पर विशेष)

पूज्य बापूजी के जीवन, उपदेश व योगलीलाओं पर आधारित तथा संतश्री के मार्गदर्शन में चल रहे दैवी कार्यों की कुछ ताजा सुखद खबरें विडियो के रूप में प्रस्तुत करनेवाली आध्यात्मिक मासिक ऑनलाइन विडियो मैगजीन 'ऋषि दर्शन' की उत्तरायण के दिन १५ जनवरी को १२वीं जयंती है। इसकी आप सभीको बधाई !

ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों के दर्शन की, सत्संग की महिमा अवर्णनीय है। कोई कितना भी दुःखी, निराश, हताश क्यों न हो, सत्संग की शीतल फुहार पड़ते ही उसके सारे दुःख एवं तपन दूर हो जाते हैं। 'ऋषि दर्शन' पूज्यश्री के ज्ञान के महासागर को अपनी गागर में भरकर लोगों तक सत्संग-अमृत पहुँचाने का कार्य कर रही है। इसे देखने से अनेकों नास्तिकों के भी हृदय में ईश्वर के प्रति सच्ची समझ और श्रद्धा की ज्योति प्रज्वलित हुई है।

'उत्तरायण ध्यान योग शिविर २०१२' में ऋषि दर्शन का प्राकट्य हुआ था। इसका विमोचन करते समय पूज्य बापूजी के श्रीमुख से जो आशीर्वचन निकले थे आज उन्हें हम मूर्तरूप में देख रहे हैं। पूज्यश्री ने कहा था : ''जैसे ऋषि प्रसाद ऐसे ही ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन घर-घर पहुँचेगी। सुनने में केवल श्रोत्र-इन्द्रिय काम करती है, देखने और सुनने में तो नेत्र, श्रोत्र दोनों इन्द्रियाँ काम करती हैं। ऋषि प्रसाद पढ़कर कई जिंदगियाँ बदल गयीं, अब हमने ऋषि दर्शन भी चालू की है। इसे देखने में श्रम नहीं पड़ता, देखते-देखते विश्राम बढ़ता है। आस्तिक हो चाहे नास्तिक हो, वह इसे देखकर ही स्वस्थ, सुखी, सम्मानित जीवन और मनोरंजनसहित तत्त्वज्ञान को पाने में पूरा अधिकारी बन सकता है, ऐसी ऋषि दर्शन है !''

यह हम तक पहुँचाती है : ✻ भगवन्नाम की रसमय धारा : आनंदमय संकीर्तन ✻ बापूजी के युवावस्था के ज्ञान-वैराग्य प्रदायक दुर्लभ सत्संग ✻ तत्त्वज्ञान के पिपासुओं के लिए तात्त्विक सत्संग ✻ प्रेरक व जीवनोद्धारक कथा-प्रसंग ✻ सुषुप्त शक्तियों को जागृत करने व परमात्म-विश्रांति दिलाने वाला भगवद्-ध्यान ✻ प्राणायाम व यौगिक क्रियाएँ ✻ पर्व-जयंतियों का शास्त्रीय महत्त्व एवं रहस्य और मनाने का सही तरीका, एकादशी माहात्म्य व विधि ✻ पुण्यदायी तिथियों व योगों का शास्त्रोक्त वर्णन ✻ भक्तों के अनुभव ✻ उत्तम स्वास्थ्य हेतु पूज्य बापूजी का स्वास्थ्य-प्रसाद, योगासन, ऋतुचर्या ✻ पूज्य बापूजी की प्रेरणा से चल रहीं सत्प्रवृत्तियाँ ✻ विद्यार्थियों को ओजस्वी-तेजस्वी बनानेवाले विशेष प्रयोग, प्रेरक प्रसंग तथा परीक्षा में अच्छे अंकों से उत्तीर्ण होने की युक्तियाँ।

लौकिक सफलता व आध्यात्मिक उन्नति के चाहक हर व्यक्ति को ऋषि दर्शन, ऋषि प्रसाद व लोक कल्याण सेतु का सदस्य अवश्य बनना चाहिए और दूसरों को भी इनकी सदस्यता दिलानी चाहिए। (ऋषि दर्शन की सेवा में लगे कर्मयोगी पुण्यात्माओं के अनुभव पढ़ें पृष्ठ ३२ पर)

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३३ अंक : ७ मूल्य : ₹ ७
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३७३
प्रकाशन दिनांक : १ जनवरी २०२४
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
पौष-माघ, वि.सं. २०८०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर हमारी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ['हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय] द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
९५१२०८१०८१ 'RishiPrasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org
www.asharamjibapu.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	शुल्क
वार्षिक	₹ ७५
द्विवार्षिक	₹ १४०
पंचवार्षिक	₹ ३४०
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ७५०

विदेशों में

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US$20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US$40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US$80
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६०००	US$200

SubjecttoAhmedabadJurisdiction.

इस अंक में...

❖ करें रामजी के आदर्श चरित्र का अमृतपान ४
❖ भेंटवार्ता ✻ मुझे बहुत दुःख है कि बापूजी जैसे उच्च कोटि के महापुरुष अब भी जेल में हैं – १२७ वर्षीय योगगुरु स्वामी शिवानंदजी ८
❖ निर्दोष बापूजी को जेल में क्यों रखा गया है ? ९
❖ सभीके प्रति सद्भाव रखें और सहयोग करें - स्वामी शरणानंदजी ९
❖ ताजा खबर
✻ सावधान रहो, अपनी महान संस्कृति से देश को मत भटकाओ ! १०
✻ वेलेंटाइन डे के सप्ताह में बढ़ता है गर्भ-निरोधक साधनों का विक्रय १६
❖ सांस्कृतिक गौरव
✻ मातृ-पितृ पूजन दिवस की आवश्यकता व उद्देश्य ११
❖ मातृ-पितृ पूजन दिवस पर समाजसेवी पुण्यात्माओं के उद्गार १३
❖ पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग ✻ परम कृपालु की अहैतुकी कृपा १४
❖ विद्यार्थी संस्कार ✻ दूसरों का अमंगल चाहने पर होता अपना अमंगल १८
❖ जीवन जीने की कला ✻ दिखने में आसान, है लाभों की खान : सर्वांगासन १९
❖ अंतर्राष्ट्रीय समाचार ✻ यूरोपियन देशों में अवसाद-रोधक दवाओं के सेवन में २५०% वृद्धि : OECD २०
❖ भजनामृत ✻ इस जग में आ के देख लिया - संत पथिकजी २१
❖ तत्त्व दर्शन ✻ पंचकोष-साक्षी विवेक - स्वामी अखंडानंदजी २२
❖ भक्तों के अनुभव
✻ मातृ-पितृ पूजन दिखा रहा वास्तविकता का दर्पण - भुवन भारती २३
❖ एकादशी माहात्म्य ✻ ब्रह्महत्या जैसे पापों व पिशाच योनि से मुक्तिदाता व्रत २४
❖ सभीसे प्रेम करें या केवल ईश्वर से ? २५
❖ गोपाष्टमी समाचार ✻ व्यापक स्तर पर मनाया गया गोपाष्टमी पर्व २६
❖ तो तुम्हारे अंतःकरण में ब्रह्मानंद प्रकट होगा - संत तुकारामजी २६
❖ ऋषि प्रसाद बाल सेवा मंडल से बच्चे हो रहे होशियार... २७
❖ दीपावली समाचार
✻ ऐसी दीपावली कि मुरझाये दिलों में छायी खुशहाली २८
❖ तो हमारी झोंपड़ी काहे को जलती ! - स्वामी अखंडानंदजी २९
❖ आयीं सर्दियाँ ✻ स्वास्थ्यप्रद व बलवर्धक तिल ३०
✻ पोषक तत्त्वों से भरपूर मकई की राब ३१
❖ अनमोल कुंजियाँ ✻ चिंता दूर, आनंद भरपूर ३१
✻ सूर्य-अर्घ्य के लाभ व अर्घ्य-पात्रों की महिमा ३३
❖ अन्य धर्मों के दोषी उपदेशकों को जमानत, किंतु निर्दोष हिन्दू संत को क्यों नहीं ? - पत्रकार शिवनारायण जांगड़ा ३३

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि TV
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९)

सेवाकार्य भी
Asharamji Bapu
Asharamji Ashram
Mangalmay Digital
यूट्यूब चैनल्स

डाउनलोड करें : Rishi Prasad App (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु), Rishi Darshan App (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं Mangalmay Digital App

अयोध्या में श्रीराम मंदिर उद्घाटन के अवसर पर

करें रामजी के आदर्श चरित्र का अमृतपान

केवल भारत की धरा ही नहीं अपितु व्यापक जनसमाज के हृदयों पर भी राज करनेवाले एवं समस्त विश्व को अपने आचार-व्यवहार, जीवन व विचारों द्वारा आदर्श जीवन-पद्धति की सुंदर शिक्षा देनेवाले भगवान श्रीरामचन्द्रजी का आदर्श चरित्र जनमानस के लिए युगों से अविस्मरणीय रहा है और आगे भी सदैव अविस्मरणीय रहेगा । लम्बी कानूनी लड़ाई के बाद श्रीरामजी के जन्मस्थान अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्मित हुआ है । उसके उद्घाटन के अवसर पर जानते हैं रामजी के सद्गुणों एवं आदर्श जीवन के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत से :

सबके आदर्श श्रीराम

रामावतार को लाखों वर्ष हो गये लेकिन श्रीरामजी अब भी जनमानस से विलुप्त नहीं हुए । क्यों ? क्योंकि श्रीरामजी का आदर्श जीवन हर मनुष्य के लिए अनुकरणीय है । रामायण में वर्णित यह आदर्श चरित्र विश्वसाहित्य में मिलना दुर्लभ है ।

एक आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श पिता, आदर्श शिष्य, आदर्श श्रोता, आदर्श वक्ता, आदर्श योद्धा, आदर्श राजा के रूप में यदि किसीका नाम लेना हो तो भगवान श्रीरामचन्द्रजी का ही नाम सबकी जुबान पर आता है । रामराज्य की महिमा आज लाखों-लाखों वर्षों के बाद भी गायी जाती है ।

भगवान श्रीरामजी के सद्गुण ऐसे तो विलक्षण थे कि पृथ्वी के प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय और जाति के लोग उन सद्गुणों को अपनाकर लाभान्वित हो सकते हैं ।

आदर्श पुत्र देखना हो तो श्रीरामजी हैं । राज्याभिषेक करते-करते पिता ने वनवास दिया तो उसे भी श्रीरामजी ने सहर्ष स्वीकार किया । श्रीराम के वनवास का मुख्य कारण – मंथरा के लिए भी श्रीराम के हृदय में विशाल प्रेम है । रामायण का कोई भी पात्र तुच्छ नहीं है, हेय नहीं है । श्रीराम की दृष्टि में तो रीछ और बंदर भी तुच्छ नहीं हैं । जाम्बवंत, हनुमान, सुग्रीव, अंगद आदि सेवक भी उन्हें उतने ही प्रिय हैं जितने भरत, शत्रुघ्न, लखन और सीताजी । माँ कौसल्या एवं सुमित्रा जितनी प्रिय हैं उतनी ही शबरी श्रीराम को प्यारी लगती है ।

आदर्श शिष्य, आदर्श गुरुभक्त देखना हो तो श्रीरामजी को देखो :

प्रातकाल उठि कै रघुनाथा ।
मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥
गुर तें पहिलेहिं जगतपति जागे रामु सुजान ॥
(रामचरित. बा.कां. : २०४.४, २२६)

गुरु-आश्रम में रामजी गायें चराने जाते हैं, बुहारी करते हैं, अतिथियों की सेवा करते हैं, उनका स्नेह से सम्मान करते हैं । उनके जैसा **आदर्श सेवक** मिलना दुर्लभ है ।

आदर्श भ्राता देखना हो तो श्रीराम हैं । राज्य का अधिकार रामजी का था फिर भी 'भरत को राज्य मिलेगा' यह सुनकर श्रीराम अत्यंत हर्षित

पद्मश्री विभूषित १२७ वर्षीय योगगुरु पधारे मोटेरा आश्रम, कहा :

मुझे बहुत दुःख है कि बापूजी जैसे उच्च कोटि के महापुरुष अब भी जेल में हैं

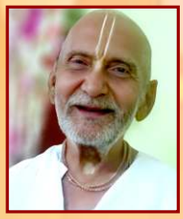

अखंड भारत के बंगाल (वर्तमान में बांग्लादेश) में जन्मे पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित **१२७ वर्षीय बाल ब्रह्मचारी स्वामी शिवानंदजी** १५ दिसम्बर को मोटेरा-अहमदाबाद स्थित संत श्री आशारामजी आश्रम में पधारे । यहाँ सबसे पहले उन्होंने पूज्य बापूजी द्वारा शक्तिपात किये हुए बड़ बादशाह की परिक्रमा की, पूज्य बापूजी की तपःस्थली मोक्षकुटीर के दर्शन किये फिर पूज्यश्री के व्यासपीठ की आरती उतारी और दंडवत् प्रणाम किया ।

भेंट वार्ता

व्यासपीठ में व्याप्त बापूजी के दिव्य आभामंडल से स्वामी शिवानंदजी अभिभूत हो गये । व्यासपीठ का सम्मान करते हुए वहाँ पर कुर्सी या गद्दी पर न बैठकर उन्होंने नीचे बिछी हुई चादर पर बैठना पसंद किया ।

उनके हृदय से निकले उद्गार : ''मैं यहाँ आकर बहुत आनंदित महसूस कर रहा हूँ । बापूजी के आशीर्वाद के लिए मैं हर पल, हर समय आराधना करता हूँ । मेरी कोई कामना नहीं है, मुझे कोई बीमारी नहीं है यह सब उनके आशीर्वाद से है ।

एलोपैथिक दवाइयाँ मैं कभी नहीं लेता हूँ, हमेशा आयुर्वेदिक ही लेता हूँ इसीलिए मेरी इतनी लम्बी आयु है । बापूजी का आशीर्वाद भी एक कारण है जिससे मेरी इतनी लम्बी आयु है ।

ऋषि-मुनियों के आशीष से आयुर्वेदिक औषधियाँ बनी हैं । एलोपैथी पूरे देश व पूरे विश्व का विनाश कर देगी ।

पूज्य बापूजी द्वारा आरम्भ की गयी १४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाने की परम्परा का बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ । बापूजी की प्रेरणा से २५ दिसम्बर को तुलसी पूजन दिवस मनाया जा रहा है । तुलसी पूजन बहुत ही उत्तम विचार है । तुलसी तो साक्षात् भगवती है । हम इसे हृदय से स्वीकार करते हैं ।

५० साल पहले बापूजी से मेरी भेंट हुई थी और उनके सत्संग से मैं बहुत प्रभावित हुआ था । मैं उनका सत्साहित्य पढ़ता हूँ । उनके आश्रम में आने का कई वर्षों का मेरा संकल्प आज पूरा हुआ । मैं यहाँ आया हूँ बापूजी को हार्दिक प्रणाम करने और भक्ति लेने । बापूजी अध्यात्म के उच्चतम शिखर पर पहुँचे हुए हैं, उच्च कोटि के महापुरुष हैं, सिद्धपुरुष हैं यह मेरी स्वयं की अनुभूति है । बापूजी परम सुख को पाये हुए संत हैं एवं दिव्य जीवन (heavenly life) जी रहे हैं । भविष्य में बड़े मंगलकारी दिन आनेवाले हैं । मुझे बहुत दुःख है कि बापूजी अब भी जेल में हैं । उनकी जल्दी रिहाई हो ।''

पूज्य बापूजी के सत्साहित्य के रसिक स्वामी शिवानंदजी ने आश्रम का बंगाली व अंग्रेजी भाषाओं का सत्साहित्य और मासिक प्रकाशन ऋषि प्रसाद प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की एवं प्राप्त किया । महाराजजी ने पूज्यश्री द्वारा चलाये जा रहे गौ-सेवा, प्राकृतिक वैदिक होली, भारतीय संस्कृति अनुरूप जन्मदिवस आदि सभी सेवा-प्रकल्पों की हृदयपूर्वक सराहना की । ❐

मातृ-पितृ पूजन दिवस की आवश्यकता व उद्देश्य

सांस्कृतिक गौरव

मातृ-पितृ पूजन दिवस : १४ फरवरी

१४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' महापर्व है । इस लोक-मांगल्यकारी, विश्वव्यापी, सभी धर्मों के लोगों द्वारा मनाये जानेवाले पर्व के प्रणेता व मार्गदर्शक हैं ब्रह्मवेत्ता संत पूज्य बापूजी । इस पर्व को सर्जित करने की आवश्यकता क्यों पड़ी तथा इसको मनाने से क्या लाभ होते हैं यह जानते हैं पूज्यश्री के ही श्रीमुख से :

प्रेमी-प्रेमिका 'आई लव यू, आई लव यू...' करके काम-विकार में गिरते हैं, थोड़ी देर के बाद अभागे ठुस्स हो जाते हैं । मैंने इससे लाखों-लाखों बच्चों की जिंदगी तबाह होते हुए सुनी है । २८ विकसित देशों में 'आई लव यू व वेलेंटाइन डे' के चक्कर में हर वर्ष १३ से १९ साल की १२ लाख ५० हजार कन्याएँ स्कूल जाते-जाते गर्भवती हो जाती हैं । जिनमें से ५ लाख कन्याएँ तो चुपचाप गर्भपात करा लेती हैं और जो नहीं करा पाती हैं ऐसी ७ लाख ५० हजार कन्याएँ कुँवारी माँ बनकर नर्सिंग होम, सरकार व माँ-बाप के लिए बोझा बन जाती हैं अथवा वेश्यावृत्ति धारण कर लेती हैं । अमेरिका और अन्य विकसित देशों के करोड़ों रुपये वेलेंटाइन डे में तबाह हुए ऐसे छोरे-छोरियों की जिंदगी बचाने में खर्च होते हैं । ऐसा काहे को करना !

मैंने देखा कि इससे तो सबकी तबाही हो रही है । मैं ईसाइयों से, मुसलमानों से पूछूँगा कि क्या आप चाहते हैं कि आपकी बेटी या बेटा दुराचारी हो ? तो वे मना करेंगे । मुसलमान ऐसा थोड़े ही चाहते हैं, ईसाई थोड़े ही चाहते हैं, हिन्दू तो चाहेगा कैसे ? सरदार चाहेंगे कैसे ? सरदार बोलेंगे : 'मेरी बेटी को बुरी नजर से देखता है... ऐ ! तेरा मुँह काला ।' और मारेंगे जूते । परंतु विदेशियों ने फैशन चला दिया : 'आई लव यू, आई लव यू...' बड़ी बेशर्माई है । बच्चे माँ-बाप को पूछें ही नहीं, लोफर-लोफरियाँ बन जायें । वे खुद बरबाद हो जायें तो माँ-बाप की क्या सेवा करेंगे ?

इसमें सबका भला है

कुछ मनुष्य तो अक्लवाले होते हैं और कुछ अक्ल खो के प्रेमिकाओं के पीछे, प्रेमियों के पीछे तबाह होते हैं, उनकी बुद्धि नष्ट हो जाती है । सुंदरी-सुंदरे जितने कामी होते हैं उतनी ही उनकी बुद्धि नष्ट हो जाती है । ऐसे कामी सँभल जायें तो अच्छा है, नहीं तो फिर ऐसे लोग मरने के बाद पतंगे होते हैं । पतंगे दीये में जलते हैं । एक जल रहा है यह दूसरों को दिख रहा है फिर भी दे धड़ाधड़... और जल मरते हैं ।

ऐसी बुद्धिवालों को गीता ने बोला **जन्तवः** अर्थात् जंतु !

तेन मुह्यन्ति जन्तवः ।

बुद्धि नहीं है, परिणाम का विचार नहीं करते हैं, बस मजा ले लो । फिर उनको सजा पर सजा मिलती है ।

'वेलेंटाइन डे' वाले तो अपनी ईसाइयत का प्रचार करते हैं परंतु लोगों की जिंदगी तबाह होती है । फिर मैं भगवान का ध्यान करके भगवान में

चौंकिये मत, यह कड़वी सच्चाई है...

वेलेंटाइन डे के सप्ताह में बढ़ता है गर्भ-निरोधक साधनों का विक्रय

भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग मंडल 'एसोचैम' (ASSOCHAM) के एक सर्वेक्षण के अनुसार 'प्रेम-प्रसंगों में संलग्न होनेवाले १८ से २४ वर्ष आयुवर्ग वाले अधिकांश युवक-युवतियाँ 'वेलेंटाइन डे' से जुड़े सप्ताह में एक-दूसरे को फूल और चॉकलेट उपहाररूप में देते हैं । २०१४ में इन दिनों में विभिन्न उपहारों की बिक्री का कारोबार करीब १६ हजार करोड़ रुपये तक पहुँचा था ।'

हाल ही में ऑनलाइन शॉपिंग की सुविधा प्रदान करनेवाली कम्पनी ब्लिंकिट (blinkit) के संस्थापक व सीईओ ने कहा कि २०२३ में उनकी कम्पनी की 'वेलेंटाइन डे' से जुड़े सप्ताह में कंडोम (गर्भ-निरोधक साधन) की भारी मात्रा में बिक्री हुई ।

सूत्रों का कहना है कि इन दिनों में होनेवाला शराब व अन्य नशीले पदार्थों का विक्रय, आत्महत्याएँ, बलात्कार व अन्य आपराधिक प्रवृत्तियों के आँकड़े भी चौंकानेवाले हैं ।

ऐसे दिनों का बहिष्कार होना ही चाहिए

वेलेंटाइन डे के दिनों में बढ़ रहे अनैतिक संबंधों की खबरें दिनोंदिन बढ़ रही हैं । इस पतनकारी माहौल को ठीक करने के बजाय इसका अन्य तरीके से लाभ उठाते हुए कुछ लोग १३ फरवरी को 'इंटरनेशनल कंडोम डे' मना-मनवा रहे हैं, यौन-संक्रामक रोगों से रक्षा हेतु जागरूकता का झंडा लिये घूम रहे हैं । पर परदे के पीछे का सच तो यह है कि इससे भावी पीढ़ी के जीवन में जागरूकता तो क्या, निस्तेजता आ रही है ।

गर्भ-निरोधक साधनों द्वारा कुछ यौन-संक्रामक रोगों से कथित रक्षण होता भी हो तो भी वेलेंटाइन डे जैसे भोगलिप्सा को भड़कानेवाले पतनकारी दिन को मनाने व इस निमित्त व्यभिचार में संलग्न होने से युवा पीढ़ी अनेकानेक यौन रोगों व अन्य विभिन्न बीमारियों का शिकार भी तो हो रही है ! 'कंडोम जैसे साधनों का प्रयोग करो तो व्यभिचार करके भी रोगों से बचोगे' ऐसी झूठी मान्यता से गुमराह होकर यह देश का युवारूपी धन अपने अनमोल ओज-वीर्य का, बल-बुद्धि व आयुष्य का ह्रास भी तो कर रहा है ! फलस्वरूप तनाव, मिर्गी, अवसाद (depression), स्मृतिक्षीणता आदि रोगों को मुफ्त में ही बुलावा दिया जा रहा है । यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई व्यक्ति विष का प्रभाव उतारने के लिए अजगर के पास जा पहुँचे ।

...ऐसे संस्कृति-घातक, चरित्रनाशक दिवस न तो स्वयं मनाइये न ही औरों को तबाह होने दीजिये । आप तो आत्म-परमात्मदेव के रस से सुमधुर बनानेवाले 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' को मनाइये-मनवाइये ।

वास्तव में जिन साधनों को रोगों से रक्षण का साधन माना जा रहा है उनकी भारत के ऋषियों-मनीषियों द्वारा वर्णित संयम-प्रधान जीवन-पद्धति में कोई आवश्यकता ही नहीं है । जिस समाज में बुद्धिशक्ति, आरोग्यता, संयम, सदाचार, परस्पर सद्भाव, विशुद्ध आनंद-उल्लास, ईश्वरीय प्रेम जैसे सद्गुणों को उभारनेवाले पर्व मनाये जाते हों, जहाँ लोगों के जीवन में मर्यादापुरुषोत्तम भगवान श्रीरामचन्द्रजी,

शीत ऋतु में विशेष सेवनीय

स्वास्थ्यप्रद व बलवर्धक तिल

आयुर्वेद के अनुसार तिल स्निग्ध, मधुर, उष्ण, पचने में भारी व वायुशामक हैं तथा कफ व पित्त प्रकुपित करनेवाले हैं । ये बल, बुद्धि एवं जठराग्नि को बढ़ानेवाले, त्वचा एवं बालों के लिए हितकर तथा वर्ण को निखारनेवाले हैं । प्रमेह (मूत्र-संबंधी विकार) में ये एक उत्कृष्ट औषधि हैं ।

आधुनिक शोधों के अनुसार तिलों में प्रोटीन, लौह, मैग्नेशियम, ताँबा, विटामिन 'ए', 'बी १', 'बी ६', 'ई' तथा दूध से ३ गुना अधिक कैल्शियम पाया जाता है । ये कैंसररोधी हैं, खराब कोलेस्ट्रॉल (LDL) व उच्च रक्तचाप (High B.P.) को नियंत्रित करते हैं तथा हड्डियों को मजबूत बनाते हैं । ३ प्रकार के तिलों में काले तिल सर्वोत्तम माने जाते हैं तथा वीर्यवर्धक हैं । इनका उपयोग विशेषरूप से औषधि के रूप में किया जाता है । सफेद तिल गुणों में मध्यम हैं । इनमें तेल की अधिक मात्रा होती है । लाल तिल गुणों में हीन माने जाते हैं ।

तिल का तेल है विशेष गुणकारी

तिल का तेल उष्ण, तीक्ष्ण, बलवर्धक एवं कफ-वातनाशक है । यह एक तरफ दुबले-पतले शरीरवालों को पुष्ट करता है तो दूसरी तरफ मोटे शरीरवालों का वजन घटाता है । इसी विशेष गुण के कारण चिकित्सा-कर्म में इसका विशेष उपयोग होता है । यह शीघ्र ही शरीर में फैलकर सूक्ष्म-से-सूक्ष्म स्रोतों के अंदर प्रवेश करनेवाला है । इस ऋतु में तिल के तेल की मालिश करना स्वास्थ्य के लिए वरदान है । भोजन में भी तिल के तेल का उपयोग कर सकते हैं ।

तिल के औषधीय प्रयोग

* ७ से १५ ग्राम (१ से २ चम्मच) तिल (काले तिल हों तो उत्तम) चबा-चबा के खायें व ऊपर से पानी पियें । इससे **अंग परिपुष्ट** होते हैं व **दाँतों के विकार दूर** होते हैं । आयुर्वेद शास्त्रों में यहाँ तक लिखा है कि इस प्रयोग को करनेवाले के **दाँत मरने तक सुदृढ़** बने रहते हैं ।

* जिन महिलाओं को प्रसूति के बाद पर्याप्त दूध नहीं आता हो वे कुछ दिनों तक सुबह खाली पेट १-२ चम्मच तिल के तेल का सेवन करें । ऊपर से गर्म पानी पियें । खुलकर भूख लगने पर भोजन करें । इससे **दूध की वृद्धि** होगी ।

त्वचा में लाये प्राकृतिक चिकनापन

सर्दियों में प्रायः त्वचा के फटने अथवा रूखेपन की शिकायत होती है । इसकी निवृत्ति के लिए तिलों को पीस के बनाये उबटन से (अथवा सप्तधान्य उबटन★ में थोड़ा-सा तिल का तेल मिलाकर) स्नान करना लाभकारी है । इससे त्वचा का रूखापन दूर होकर **प्राकृतिक चिकनापन** आता है । यह प्रयोग **वायुशामक है एवं नेत्रों के लिए भी लाभदायी** है ।

तिलकुट

लाभ : यह बल, वीर्य तथा मेधाशक्ति वर्धक है । जिनका शारीरिक विकास ठीक से नहीं हुआ है, जिन्हें अल्प परिश्रम से ही थकान हो जाती है, जिन्हें धातुक्षीणता, अधिक वीर्यनाश के कारण दुर्बलता, दिमागी कमजोरी तथा बार-बार पेशाब

★ यह आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों तथा समितियों से प्राप्त हो सकता है ।

भगवद्-ज्ञान की रसधार

आनंद भजनमाला

श्रद्धा, भक्ति, प्रभुप्रीति की ज्योत जगानेवाले, गुरुनिष्ठा, ज्ञान, वैराग्य, विवेक बढ़ानेवाले भजनों का संग्रह

₹ ३

नूतन सत्साहित्य

बुद्धि कौशल्य

बच्चों के लिए खास

बच्चों के विवेक को प्रखर, बुद्धि को कुशाग्र एवं मन को सुसंस्कारी बनाने में सहायक

₹ ३०

पूज्य बापूजी के अमृत-वचनों से सुसज्जित

दीवाल घड़ी

₹ २००

अलार्म घड़ी

₹ १४०

₹ १००
१ कि.ग्रा.

पोषक तत्त्वों से भरपूर, सेहत का खजाना जाहिदी खजूर

ये वात-पित्तशामक एवं १४० प्रकार की बीमारियों को जड़ से उखाड़नेवाले हैं। शर्करा, प्रोटीन्स, कैल्शियम, पोटैशियम, लौह, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, रेशों (fibres) आदि से भरपूर हैं। तुरंत शक्ति-स्फूर्ति देनेवाले ये खजूर रक्त-मांस, वीर्य व कांति वर्धक होने के साथ-साथ कब्जनाशक तथा हृदय व मस्तिष्क के लिए बलप्रद हैं। इनका सेवन बारहों महीने कर सकते हैं।

सिनर्जी हॉट व कोल्ड ड्रिंक उत्तम होमियोपैथिक औषधियों का सुंदर समन्वय

✻ एक ऐसा प्राकृतिक एनर्जी ड्रिंक जो आपके पूरे परिवार को दिनभर दे स्फूर्ति व करे स्वास्थ्य-सुरक्षा ✻ चाय की लत छुड़ाने और उसके दुष्प्रभावों से बचने हेतु चाय का एक उत्तम विकल्प ✻ मस्तिष्क की कार्यक्षमता व एकाग्रता बढ़ाये।

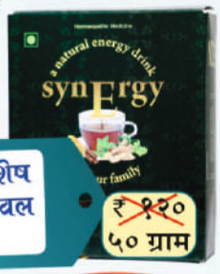

३३% की विशेष छूट। पायें केवल ₹ ८० में

~~₹ १२०~~
५० ग्राम

₹ २२५
१ कि.ग्रा.

देशी गाय के घी, आँवला व अनेक जड़ी-बूटियों से निर्मित

च्यवनप्राश

केसर, मकरध्वज व चाँदी युक्त

स्पेशल च्यवनप्राश

✻ स्मरणशक्ति, बल, बुद्धि, स्वास्थ्य, आयु एवं इन्द्रियों की कार्यक्षमता वर्धक ✻ रोगप्रतिकारक शक्ति, नेत्रज्योति व स्फूर्ति वर्धक ✻ हृदय व मस्तिष्क पोषक ✻ फेफड़ों के लिए बलप्रद ✻ ओज, तेज, वीर्य, कांति व सौंदर्य वर्धक ✻ हड्डियों, दाँतों व बालों को बनाये मजबूत ✻ क्षयरोग में तथा शुक्रधातु के व मूत्र-संबंधी विकारों में उपयोगी ✻ वात-पित्तजन्य विकारों में तथा दुर्बल व्यक्तियों हेतु विशेष हितकर।

₹ ३००
१ कि.ग्रा.
₹ १६०
५०० ग्राम

शुद्ध स्वर्णभस्म युक्त सुवर्णप्राश टेबलेट

ये गोलियाँ बालकों के बौद्धिक, मानसिक तथा शारीरिक विकास के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। ये आयु, शक्ति, मेधा, बुद्धि, कांति व जठराग्नि वर्धक तथा उत्तम गर्भपोषक हैं। गर्भवती महिला इनका सेवन करके निरोगी, तेजस्वी, मेधावी संतान को जन्म दे सकती है। विद्यार्थी भी धारणाशक्ति, स्मरणशक्ति तथा शारीरिक शक्ति बढ़ाने के लिए इनका उपयोग कर सकते हैं।

₹ २७०
६० गोली

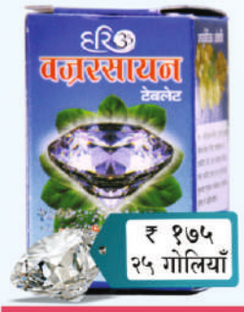

₹ १७५
२५ गोलियाँ

शुद्ध हीरा-भस्मयुक्त वज्र रसायन टेबलेट

ये गोलियाँ देह को वज्र के समान दृढ़ व तेजस्वी बनानेवाली हैं। ये त्रिदोषशामक, जठराग्नि व वीर्य वर्धक एवं दीर्घायुष्य-प्रदायक हैं। मस्तिष्क को पुष्ट कर बुद्धि, स्मृति तथा इन्द्रियों की कार्यक्षमता बढ़ाती हैं। ये कोशिकाओं के निर्माण में सहायक हैं।

कफ सिरप

₹ ४०
१३० ग्राम

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

घर-घर कैलेंडर 'दिव्य दर्शन' अभियान (वर्ष २०२४)

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st Jan 2024

साधकगण एवं युवा सेवा संघ के सेवादार भाई इस अभियान के अंतर्गत साधकों, मित्रों, रिश्तेदारों एवं परिचितों के घर जाकर उन्हें दीवाल दिनदर्शिका (वॉल कैलेंडर), पॉकेट कैलेंडर व डायरी पहुँचाने की सेवा का लाभ लें।

प्राप्ति : संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर तथा श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवा केन्द्रों पर। ऑनलाइन ऑर्डर हेतु : **www.ashramestore.com/calendar** सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग), ६१२१०७६१ (युवा सेवा संघ मुख्यालय)

ऋषि प्रसाद के माध्यम से घर-घर पहुँच रहा सनातन धर्म का अमृत

पूज्यश्री से स्पर्शित रुद्राक्ष माला योजना अंतिम चरण में... यह प्रसाद हमने तो पा लिया आप रह तो नहीं गये ?

तुलसी पूजन दिवस पर देशभर में मच रही है वृंदा अभियान की धूम

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन ऋषि प्रसाद, ऋषि दर्शन व लोक कल्याण सेतु की सदस्यता हेतु स्कैन करें : Rishi Prasad Rishi Darshan Lok Kalyan Setu

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : धर्मेश जगराम सिंह चौहान **मुद्रक** : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी